प्रथम अध्याय

हिन्दी लघु उपन्यासों से तात्पर्य ----

प्रथम अध्याय

हिन्दी लघु-उपन्यासों से तात्पर्य ----

उपन्यास ---

उपन्यास एक स्वतंत्र विधा है। `उपन्यास` शब्द संस्कृत के `उप न्यास` धातु तथा प्रत्यय के योग से बना है। प्रस्तुत शब्द का उत्पत्तिलभ्य अर्थ समीप में रखना है। जो साहित्यिक कृति मानव जीवन के निकट पड़ती है उसे उपन्यास कहते है। `उपन्यास प्रसादनम्` व्याख्या के अनुसार मानव आत्मा को प्रसादित, आनंदित करे वह कृति उपन्यास है। उपन्यास सम्राट प्रेमचंद जी के अनुसार मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना उपन्यास का मूल प्रयोजन है।

अंग्रेजी में `उपन्यास` के लिए Novel शब्द का प्रयोग होता है। उपन्यास में मानव जीवन का कल्पना परक चित्रण होता है। मानव जीवन की और जगत् की जितनी सुन्दर और सर्वांगपूर्ण अभिव्यक्ति उपन्यास विधा के अतिरिक्त अन्य किसी विधा में नही देखी जाती। इसलिए उपन्यास आधुनिक युग का महाकाव्य है। उपन्यास मानव जगत् और जीवन के निकट होने के कारण सर्वाधिक लोकप्रिय बन गया है।

हिन्दी लघु उपन्यास —

हिन्दी में लघु उपन्यास को `उपन्यासिका`[१] कहा गया है। लघु उपन्यास के लिए अंग्रेजी में Novelette पर्याय वाची शब्द है। `यह Nouvella फ्रांस, Novella लेटिन, Novilla इटली, स्पेन ही लघु उपन्यास के प्रेरणा स्त्रोत है।[२] हिन्दी में कुछ विद्वानों ने लघु उपन्यास पर अपने अपने मत प्रकट किये है। डा. प्रतापनारायण टंडन जी ने लघु उपन्यास को विकसित विधा मानकर अन्य विधा से तुलना की है। डा. घनश्याम मधुप ने भी प्रस्तुत विधा को स्वतंत्र विधा के रुप में स्वीकार किया है। आकार गत दृष्टिसे उपन्यास और लघु उपन्यास के बीच में रेखा खींचना कठिन कार्य है। क्योंकि दोनों विधा के तत्वों में सूक्ष्म भेद पाये जाते है। लघु उपन्यास में `आधुनिक सामाजिक संगठन की जटिलता, बौध्दिक दुरुहता, द्वितीय समस्याओं की बहुलता आदि को देखते हुए बृहत् उपन्यास असंदिग्ध रुप से एक महान साहित्य माध्यम है। इस प्रकारसे लघु उपन्यास आंतरिक अनुभूति की तीव्रता और गहराई की दृष्टि से उतना ही महत्व रखता है।[3]` लघु उपन्यास की कथावस्तु में सांकेतिकता, सुगठित भाषा, पात्रों की मर्यादा कथोपकथन में सरलता एवं बोधगम्यता आदि बाते महत्वपूर्ण है।

---

१ हिन्दी साहित्य कोश - सं.डा.धीरेन्द्र वर्मा (प्रधान) प्रकाशक, ज्ञानमंडल लि., बनारस प्र.सं., संवत् २०१५, पृ.६७९ ।

२ हिन्दी के लघु उपन्यासों का शिल्प - माधुरी खोसला, विजयन्त प्रकाशन, १९७३, पृ.२२ ।

३ हिन्दी उपन्यास कला - डा. प्रतापनारायण टंडण, प्रकाशक - हिन्दी समिति सूचना विभाग, उ.प्र., प्रथम संस्करण, १९६५, पृ.२६ ।

हिन्दी लघु उपन्यास का उद्भव —

हिन्दी कथा साहित्य में आज की उभरती हुई लोकप्रिय विधा लघु उपन्यास का उद्भव ' समय की मांग को लेकर हुआ है, कहानी की सघनता और सुगमता लेकर तथा उपन्यास की संरचना एवं जीवन यथार्थ को आत्मसात करते हुए इस विधा का जन्म हुआ है।[१] बृहत् उपन्यासों में मानव जीवन के विविध अंगोंका चित्रण रहता है। परंतु २१वी शती की ओर जाते हुए मानव इतना व्यस्त हो गया है कि ' आज के जटिल सामाजिक परिवेश [illegible] विशृंखल युग जीवन को सम्पूर्णता में न समेट पाना उपन्यासकार की विवशता बनी और जब उसने समाज युग के एक प्रश्न, एक अनुभव को अपनी कलाकृति का आधार बनाया गया तो उपन्यास स्वत:ही लघु हो गया '[२]

आज दर्शक टेस्ट मैच के स्थान पर वन-डे देखना पसंद करते है, नाटकोंका स्थान एकांकी ने ग्रहण किया है। मानव की कम समय में अधिक आनंद उठाने की प्रवृत्ति साहित्य के क्षेत्र में दृष्टव्य है, लघु उपन्यास से ' कम पैसे खर्च करके पाठक को कहानी से अधिक मनोरंजन मिलता है। रात को सोने से पूर्व या यात्रा में समय काटने के लिए लघु उपन्यास पढा जा सकता है।[३]

लेखक अगर बृहत् उपन्यास लिखे तो प्रकाशक प्रकाशित नही करना चाहते आज महंगाई के दिनों में भारी मूल्योंवाले उपन्यास लेकर पढनेवाले पाठक कम है। आज किसके पास समय है कि वह बृहत् उपन्यास पढे ? और लघु उपन्यास कम मूल्यों में मिलने से अधिक पाठक पढते है। लघु उपन्यास जल्दी बिकने के कारण प्रकाशक प्रकाशन के लिए तैय्यार होते है। बृहत् उपन्यास पढने के लिए पाठक के पास ना

---

१ हिन्दी लघु उपन्यास - डा.धनश्याम मधुप,
राधाकृष्ण प्रकाशन, प्र.सं.१९७१, पृ.४७।

२ हिन्दी के लघु उपन्यासों का शिल्प -
माधुरी खोसला,
विजयंत प्रकाशन, १९७३, पृ.१३।

३ मधुमति (पत्रिका) लेख - ' स्वातंत्र्योत्तर लघु हिन्दी उपन्यास '
डॉ.महेशचंद्र शर्मा, मई १९९१, पृ.२१।

है ना घन। लघु उपन्यास कम समय में अधिक मनोरंजन करता है।"लघु उपन्यास एक दो प्रश्नों को लेकर चलते है और समाज में बढती हुवी जटिलता तथा उससे उत्पन्न समस्याओं को अपना आधार बनाते है। फलस्वरुप उनकी मांग का बढना स्वाभाविक है और वे अधिक लोकप्रियता प्राप्त करते जा रहे है।'[१]

लघु उपन्यास के तत्व --

विद्वानोंने किसी भी साहित्यिक कृति का दर्जा निश्चित करने के लिए कुछ मानदण्ड निर्धारित किये है। अत: लघु उपन्यास इसके लिए अपवाद नहीं है। लघु उपन्यास के तत्व निम्न लिखित है ---

१) कथावस्तु
२) पात्र या चरित्र चित्रण
३) कथोपकथन
४) वातावरण
५) भाषा शैली
६) उद्देश्य।

इन तत्वोंपर क्रमश: जानकारी हासिल करेंगे।

१) कथावस्तु --

उपन्यास किसी भी भाषा का हो उसमें कोई न कोई कथानक होता है। कथावस्तु के बिना वह कृति संभव नही ' वस्तुत: लघु उपन्यासो में कथानक की एकात्मकता को विशेष महत्व दिया जाता है। उपन्यासों में पाई जानेवाली

---

१ हिन्दी लघु उपन्यास - घनश्याम मधुप -
राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९७१,
पृ.६८।

उपकथाओं के लिए लघु उपन्यासों में कोई स्थान नहीं है।'[१] इसलिए लघु - उपन्यास में अधिकारिक कथा रहती है। जीवन में घटित किसी घटना प्रसंग, समस्या को लेकर लघु उपन्यास लिखे जा रहे हैं। महाकाव्य में जीवन के विराट अंग का चित्रण होता है, तो खण्डकाव्य में किसी एक घटना का ठीक उसी प्रकार उपन्यास की भान्ति लघु उपन्यासों में जीवन के किसी घटना, अंग का चित्रण होता है।

लघु उपन्यास के कथानक में लौकिकता, स्वाभाविकता, रोचकता, संबध्यता प्रभावोत्पादकता, सांकेतिकता, वास्तविकता, एकतानता आदि गुणों का विशेष महत्व है। कमलेश्वर का 'लौटे हुए मुसाफिर', गंगा प्रसाद विमल 'मरीचिका', यशपाल 'बारह घण्टे', राजेन्द्र यादव 'कुलटा', निर्मल वर्मा 'वे दिन', शिवानी 'कैंजा' आदि उपन्यासों की कथावस्तु में उपर्युक्त गुण दृष्टव्य है।

२) <u>पात्र या चरित्र चित्रण</u> --

उपन्यास मानव जीवन का चित्रण है। लघु उपन्यास नाम से स्पष्ट है कि, इसमें लघुता की प्रधानता होती है। 'जीवन के किसी एक अंग या छोटे से छोटे सत्य को लेकर चलनेवाले लघु उपन्यास में पात्रों की संख्या अत्यन्त कम होती है।'[२] वह तीन से चार तक सीमित होती है। सभी पात्र अपने अपने वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले हो। 'लघु उपन्यासकार को इस बात का स्मरण रखना होगा कि यथार्थ और आदर्श के बीच उसके पात्र सरसता और सजीवता न खो दे। परिवेश और स्थितियों के अनुकूल ही पात्रों का चित्रण क्रम होना चाहिए।'[३]

---

१ हिन्दी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग - डॉ. त्रिभुवन सिंह, हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी, प्रथम संस्करण, १९७४, पृ. ९३।

२ हिन्दी लघु उपन्यास - डा. घनश्याम 'मधुप', राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९७१, पृ. ५६।

३ हिन्दी लघु उपन्यास - डा. अमर जयसवाल, विद्या विहार प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९८४, पृ. ६६।

मानसिक संघर्ष का होना लघु उपन्यास प्राण माना जाता है। पात्रो में अनुकूलता, स्वाभाविकता, सप्राणता, सहृदयता, मौलिकता, कलात्मकता, द्वंद्वात्मकता, बौध्दिकता आदि विशेषताओं एवं गुणों को चित्रित करना पड़ता है। पात्रोंका चरित्र चित्रण पाँच प्रकार से किया जाता है --

१) लेखक अपने पात्रों का परिचय स्वयं दे।
२) पात्र स्वयं अपना परिचय प्रस्तुत करे।
३) एक पात्र दूसरे पात्र का परिचय दे।
४) पात्र के कार्यो से उसका चरित्र स्पष्ट हो। और
५) कभी पात्र स्वयं अपने मनोविश्लेषण द्वारा अपनी चारित्रिक विशेषताओं को स्पष्ट करता है।

३) कथोपकथन --

कथोपकथन कथा का विकास करता है तथा पात्रों के चरित्र चित्रण में सहायक होता है। लघु उपन्यास में कथोपकथन लम्बे चाहे न हो। `लघु उपन्यासों से संवादों में संक्षिप्त भाषा की स्पष्टता और अर्थ गौरव का होना आवश्यक है। संवादो में स्वाभाविकता, सजीवता एवं प्रसंग की अनुकूलता होना भी आवश्यक है।`[१] कथोपकथन की भाषा पात्रानुकूल, संक्षिप्त भाषा के साथ स्वाभाविकता लघु उपन्यास का अनन्य साधारण गुण माना जाता है।

संवादो में सीधापण, सरलता, स्पष्टता के कारण कथा प्रवाह में नाटकीयता आती है। छोटे से छोटे संवाद अधिक चुस्त आकर्षक तथा कथा को गतिमय बनाते है। संवाद द्वारा लेखक को अपने विचार प्रकट नही करने चाहिए। क्योंकि संवादो में बोझिलता आ जाती है।

---

१ हिन्दी लघु उपन्यास - डॉ.अमर जयसवाल - विद्याविहार प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९८४, पृ.६३।

४) <u>वातावरण</u> —

वातावरण निर्मिती लघु उपन्यास का महत्वपूर्ण तत्व है। ` वातावरण` शब्द से ही स्पष्ट है कि, उस कृति में तत्कालिन काल,अथवा समय क्या है और स्थान तथा समय की परिस्थितियाँ क्या है, उनका पात्रों पर कैसा प्रभाव पड़ता है। देश काल का वर्णन बाहरी रुप है परन्तु वातावरण मानसिक भी हो सकता है। ` देशकाल एवं वातावरण के चित्रण के लिए लघु उपन्यासों में विशेष अवकाश नहीं रहता लेखक प्रमुख रुप से खंड चित्रों को अपनी प्रतिभा द्वारा संकलित करता है जो लघुकथा के प्रवाह में प्रभाविष्णुता पैदा करके इसे अधिक से अधिक प्रभावोत्पादकता प्रदान करे।``[१] वातावरण निर्मिती के लिए लघु उपन्यासकार को ऐसे शब्दों का प्रयोग करना अनिवार्य है, जिससे पाठक - भलिभांति उस परिस्थिति से परिचित हो सके। उदाहरणार्थ — शिवानी के "कृष्णावेणी"उपन्यास में मंदिर का वर्णन मैंने दक्षिण के जितने भी मंदिर देखे, कपालेश्वर के इस मंदिर की उन सबसे विभिन्न छटा है। स्थापत्य देखकर लगता है यह संभवत: पंद्रहवी शताब्दी का है, दीर्घाकार काली भुजंग मुर्तियाँ,अंधेरे संकरे गुप्तकक्ष में झाकझाक चमकता दिव्य शिवलिंग उतनीही काली चिकनी पसीना छुती अर्धनग्न देह को नंगी तलवार - सा चमता पुजारी। दूसरे एक के हाथ में आरती का थाल, जिसकी प्रकपित शिखा क्रमश: एक के बाद एक शिखाओं को किसी बाजीगरी चमत्कार से जलाती है।[2]

इस परछे को पढकर मंदिर का वर्णन आँखो के सामने नही हटता। विशेषता ऐतिहासिक उपन्यासों और आंचलिक उपन्यासों में वातावरण निर्माण करना लेखक का बुध्दि कौशल्य माना जाता है।

---

१ हिन्दी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग -
डॉ. त्रिभुवनसिंह ,हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी,
प्रथम संस्करण, १९७४, पृ.९३।

2 कृष्णवेणी - शिवानी - सरस्वती विहार, प्र.सं. १९८७ पृ.६।

५) माषा शैली --

माषाभिव्यक्ति का माध्यम माषा है और मावों तथा विचारों की अभिव्यक्ति का दूसरा नाम है शैली । लघु उपन्यास में माषा की सरलता, स्पष्टता, मधुरता, स्वामाविकता होनी चाहिए । उपन्यास में बोलचाल की माषा का प्रयोग हो तो वह अधिक वास्तविक तथा सजीव लगता है। सर्वमान्य जनता में प्रचलित हिन्दी, संस्कृत, फारसी, अरबी, अंग्रेजी शब्दों के साथ-साथ देशज शब्दोंका प्रयोग किया जाय । माषा में स्पष्टता, सरलता, सजीवता, प्रवाहमयता, मनोरमता, मर्मस्पर्शिता, व्यंग्यात्मकता आदि गुण हो । माषा, पात्रानुकूल, विषयानुकूल हो ।

आधुनिक लघु उपन्यासों की सफलता बहुत उनकी शैली पर निर्मर है । ` लघु उपन्यास में भिन्न भिन्न नवीन शैलियों का प्रयोग मिलता है। प्राय: कथा और अभिव्यक्ति के नूतन प्रयोग के लिए उपन्यासकार लघु-उपन्यास पहले से शैलीगत पृथकता रखता ही है। `[१]

आमतौर पर शैलियाँ दो प्रकार की होती --- है।--

१) कथात्मक शैली ,

२) रुपात्मक शैली ।

(१) कथात्मक शैली ---

प्रस्तुत शैली में सांकेतिकता अनिवार्य रहती है। अधिकतर लघु उपन्यासों में इस शैली का प्रयोग होता है। केवल अनावश्यक प्रसंगों से बचने के लिए लेखक कल्पना तत्व का सहारा लेता है। उदाहरणार्थ कमलेश्वर का `तीसरा आदमी`, जैनेंद्र के `सुनीता` और `परख` लघु उपन्यास इस कोटि के अन्तर्गत आ जाते है।

---

१ हिन्दी लघु उपन्यास - डा.धनश्याम `मधुप` -राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९७१, पृ.६३ ।

(२) रुपात्मक शैली --

इस शैली में प्राय: नवीनतम प्रयोग होते है। कृति में समयावधि, विशेषध्वनि, चेतना आदि रुपों का प्रयोग होता है। उदाहरण के लिए -- गिरधर गोपाल कृत ` चाँदनी का खंडहर ` लघु उपन्यास में समयावधि रुप , प्रभाकर माचवे कृत ` परंतु ` लघु उपन्यास में चेतना रुप, रमेश बक्षी का ` अठारह सूरज के पौधे ` लघु उपन्यास में ध्वनि रुप महत्व पूर्ण है।

हिन्दी लघु उपन्यास की अनेक शैलियाँ हैं ` वर्तमान युग में शैलियों के जितने विभिन्न प्रयोग लघु उपन्यास इस विधा में हो रहे है। संभवत: उतने विभिन्न प्रयोग साहित्य की किसी भी दिशा में नहीं हो रहे। इसका कारण है कि विकास की संभावनाएँ मिलना जितनी इस विधा में उतनी अन्यत्र नहीं। `[१] फिर भी शैलियों के निम्न लिखित पाँच प्रकार है। ---

१) वर्णनात्मक शैली ,
२) मनोविश्लेषणात्मक शैली,
३) पत्र शैली,
४) डायरी शैली, और
५) आत्मकथात्मक शैली।

उपर्युक्त शैलियों में लिखे गये लघु उपन्यास और लघु उपन्यासकारों के नाम इस प्रकार है ----

१) वर्णनात्मक शैली ---

प्रस्तुत शैली को ऐतिहासिक शैली भी कहा जाता है। लेखक अपनी ओर से वर्णन करता हुआ अपना लक्ष्य साध्य करता है। ` लौटे हुए मुसाफिर ` में कमलेश्वर ने इस शैली का प्रयोग किया है।

---

१ हिन्दी लघु उपन्यास - डा. अमर जयसवाल,
विद्या विहार प्रकाशन, प्र.संस्करण, १९८४,
पृ.८७।

२) मनोविश्लेषणात्मक शैली ---

इस शैली अन्तर्गत लेखक पात्रों के मन की चित्रविचित्र दशाओं का वर्णन करता है। `सुनीता` में जैनेंद्र जी ने `सुनीता' का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण प्रस्तुत किया है।

३) पत्रशैली --

पत्र शैली में पात्र एक दुसरे से पत्र भेजते है और कथावस्तु आगे बढती है। पाण्डेय बेधन शर्मा `उग्र' लिखित `चन्द हसीनों के खतूत` लघु उपन्यास पत्र-शैली का उत्तम उदाहरण है।

४) डायरी शैली --

लेखक अपने जीवन की दैनिक घटनाओंका ब्योरा लिखता चला जाता है। दुसरों के जीवन घटित घटनाए पाठक दिलचस्पी से पढते है शायद इसलिए डायरी शैली रोचक एंव लोकप्रिय है। श्री.महेन्द्र भल्ला का `एक पति के नोटस` डायरी शैली में लिखा गया लघु उपन्यास है।

५) आत्मकथात्मक शैली ---

इस शैली में उपन्यासकार प्रथम पुरुष में अपने अनुभवों को प्रकट करता है। इसलिए पात्र `मै` या `हम` सर्वनाम से संबोधन करते है। शिवानी का लघु उपन्यास `कृष्णवेणी` में आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

६) उद्देश्य --

कोई कृति बीना उद्देश्य की हो ही नही सकती। अत: लघु उपन्यास इसके लिए अपवाद नही है। विशेषकर लघु उपन्यासों के दो प्रमुख उद्देश्य माने जाते है ---

१) मनोरंजन,

२) उद्बोधन।

लघु उपन्यासों में विशेषकर ` संक्षिप्त जीवन या जीवन के किसी एक कोण का विधिवत सूक्ष्म संवेदनाजन्य चित्रण करना लघु उपन्यास का लक्ष्य है।'[१]

उपन्यास में उद्देश्य का वही स्थान है जो जीव में आत्मा का है। वस्तुविधान का शारीर तत्व, चरित्र विधान प्राणतत्व और उद्देश्य उपन्यास का आत्मतत्व है। अत: उद्देश्य हीन कृति आत्महीन मनुष्य के समान है।

मानव जीवन के या समाज के प्रश्नोंपर विचार उत्पन्न करके हमें सोचने, समझाने के लिए झकझोर देना लघु उपन्यास का उद्देश्य है। इस प्रकार मानव मन के मनोभावों, संघर्षों तथा सामाजिक वैयक्तिक समस्याओं को लघुउपन्यासों में खडा करने का लघु उपन्यासकार का मुख्य उद्देश्य है। कुछ विद्वानोंका आरोप है कि, लघु उपन्यास का कलेवर छोटा होने से उसमें किसी ज्वलन्त, भारी समस्या सुलझाना संभव नही है। परंतु यह मत गलत है क्योंकि मानव जीवन के किसी एक पक्ष को यथार्थ रुपमें चित्रित करना लघु उपन्यास की सफलता कही जाती है।

हिन्दी लघु उपन्यासों का विकास क्रम ----

हिन्दी लघु उपन्यासों का विकास क्रम प्रस्तुत करते हुए उसे चार सोपानों में हम बाँट सकते है।

१) प्रेमचन्द पूर्व लघु उपन्यास।
२) प्रेमचन्द युगीन लघु उपन्यास।
३) प्रेमचन्दोत्तर लघु उपन्यास।
४) साठोत्तरी लघु उपन्यास।

विस्तार के भय की दृष्टिसे मैंने चार कालों में विभाजित प्रतिनिधि लघु उपन्यासकार और उनके प्रसिध्द लघु उपन्यास के नाम देने का प्रयास किया है।

---

१ मधुमति (पत्रिका) लेख - ` स्वांतत्र्योत्तर लघु हिन्दी उपन्यास`
डा. महेशचन्द्र शर्मा , पृ.२१।

१) प्रेमचंद पूर्व लघु उपन्यास --

हिन्दी लघु उपन्यास का प्रारंभिक काल जासुसी, ऐयारी, तिलस्मी उपन्यासों का था। मनोरंजन करना एवं धार्मिक उपदेश करना इस युग के उपन्यासों का उद्देश्य था।

हिन्दी का प्रथम उपन्यास श्री निवासदास कृत ' परीक्षा गुरु ' आकारगत दृष्टिसे लघु ही था। श्री श्रध्दाराम फिल्लौरी का ' भाग्यवती ' लघु उपन्यास है। डा. पुष्पपाल सिंह " श्री गौरीदत्त प्र का देवरानी जिठानी की कहानी।"[१] को हिन्दी का पहला लघु उपन्यास मानते है।

इस काल के कुछ प्रमुख लघु उपन्यास कार और लघु उपन्यास के नाम निम्न - लिखित है ---

१) रामप्रसाद लाल ' हमाल का मुर्दा ' - १९०३
२) जयराम दास गुप्त ' लंगडा खूनी ' अप्राप्य
३) राम प्रसाद सत्पाल ' किरण शशि ' १९०६
४) लज्जाराम शर्मा ' बिगडे का सुधार ' १९००
५) कृष्णा वर्मा ' चम्पा ' १९१६
६) गंगा प्रसाद गुप्त ' लक्ष्मीदेवी ' अप्राप्य
७) श्याम किशोर वर्मा ' काशी यात्रा ' अप्राप्य

२) प्रेमचंद युगीन लघु उपन्यास ---

प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के युग निर्माता है। उनकी साहित्य धारा आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी है। इस काल में भी लघु उपन्यास अपना जोर पकड रहा था प्रेमचंद युगीन लघु उपन्यासकारों के नाम कृति का नाम निम्नलिखित प्रकारसे है ---

---

१ डा. पुष्पपाल सिंह से पत्रव्यवहार से प्राप्त दि.१-६-१९९२।

१) राधिका रमण प्रसाद ` तरंग ` सन १९२१
२) पाण्डेय बेचन शर्मा ` उग्र ` चंद हसीनों के खतूत ` सन १९२३
३) जैनेंद्रकुमार ` परख ` सन १९२६
४) इलाचंद्र जोशी ` लज्जा ` सन १९२९
५) प्रेमचंद्र - ` प्रतिज्ञा ` सन १९२९
६) भगवतीचरण वर्मा ` चित्रलेखा ` सन १९३७
७) सियाराम शरण गुप्त ` नारी ` सन १९३९ ।

३) प्रेमचंदोत्तर लघु उपन्यास ---

प्रेमचंद का हिन्दी कथात्मक साहित्य में आगमन वरदान साबित हुआ । इस काल में लिखे गये प्रतिनिधि लघु उपन्यासकार और लघु उपन्यासों के नाम निम्नलिखित है ----

१) नागार्जुन ` बलचनमा ` सन १९४९
२) डा.धर्मवीर भारती ` सूरज का सातवा घोडा ` सन १९५२
३) डा.देवराज ` बाहर - भीतर ` सन १९५४
४) उपेन्द्रनाथ अश्क ` पत्थर अल पत्थर ` सन १९५७
५) कृष्णा सोबती ` डार से बिछुडी ` सन १९५७
६) बलदेव वैद्य ` उसका बचपन ` सन १९५७
७) राजेंद्र अवस्थी ` सूरज किरण की छांव ` सन १९५९ ।

४) साठोत्तरी लघु-उपन्यास --

इस काल में हिन्दी में अधिकतर लघु उपन्यास लिखे गये ---

१) राजकमल चौधरी ` नदी बहती थी ` सन १९६१
२) राजेन्द्र यादव ` अनदेखे अनजान फुल ` सन १९६२
३) कमलेश्वर ` एक सडक सतावन गलियाँ ` सन १९६१
४) निर्मल वर्मा ` वे दिन ` सन १९६४
५) फणीश्वरनाथ रेणु ` जुलूस ` सन १९६५

६) शिवानी 'कैंजा' | सन १९७८
७) उषा प्रियंवदा 'रुकोगी नही राधिका' | सन १९८४ ।

आज हिन्दी लघु उपन्यासों में 'समाज की, विशेषत: निम्नमध्य वर्ग की आकांक्षाओं, परिस्थितियों आदि को सजीव यथार्थ चित्रण प्राप्त होता है। इस यथार्थ चित्रण के मूल में लेखकों का लक्ष्य इसकी बुराइयों के प्रति पाठक को जागरूक करना ही रहा।'[१] इसलिए लघु उपन्यासकारों की विशेषता है कि किसी समस्या को पाठकों के सामने उपस्थित कर देते और उस समस्या का समाधान ढूंढना पाठक वर्ग का कार्य है।

आज हिन्दी लघु उपन्यास एक मौलिक विधा होते हुए शिल्पगत, अभिनव एवं महत्वपूर्ण दिशा है।

---

१ स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास - डा. गीता - नचिकेता प्रकाशन, प्र.संस्करण, १९८२, पृ.४८।